संगीताचार्य

तबला

(क्रियात्मक तथा शास्त्र)

नियम 1. संगीत अलंकार (तबला) अथवा समकक्ष उपाधि धारण करनेवाला विद्यार्थी संगीत आचार्य परीक्षा दे सकता है। संगीत आचार्य की तैयारी में कम से कम दो वर्ष का अभ्यास।

नियम 2. संगीत अलंकार के सभी ताल तथा ताल संबधी शास्त्र आदि का यथार्थ ज्ञान होना आवश्यक है। सभी प्रचलित तालों की जानकारी अच्छी तरह से रखनी चाहिए।

नियम 3. संगीत आचार्य के विद्यार्थी को महफिलों में उच्चकोटी की कला के प्रदर्शन की क्षमता रखना अनिवार्य है।

नियम 4. संगीत आचार्य के विद्यार्थी को मंडल की संगीत अलंकार परिक्षा के अतिरिक्त किसी भी मान्यवर विश्वविद्यालय (University) का स्नातक (Graduate) होना आवश्यक है।

नियम 5. संगीत आचार्य की परीक्षा तीन विभागों में विभक्त है।
(अ) निबंध (ब) मौखिक, (क) मंच प्रदर्शन।

(अ) निबंध, अंक : 100

1. परीक्षार्थी अपनी इच्छानुरूप कोई भी शीर्षक चुनकर मान्यता ले सकता है। किन्तु निबन्ध ऐसा होना चाहिए कि शीर्षक पर कुछ खोज कार्य (Research) दिखाई दे।
2. परीक्षार्थी के मार्गदर्शन के लिए नीचे कुछ शीर्षक (Topics), जिनमें से किसी एक पर अनुसंधान होना आवश्यक है, दिए हैं।
   (1) ऐतिहासिक तालवाद्य, तबले का उगम और विकास । (प्राचीन,मध्य तथा अर्वाचीन काल तक)
   (2) मात्रा, लय, वृत्त तथा छंद इत्यादि का तबले की बोली या भाषा से सम्बन्ध।
   (3) तबले की भाषा या बोली। वर्ण बोल रचना, उनका अर्थ और तदनुसार रचना।

Scanned by CamScanner

(4) तबला वादनः परंपरा और कलात्मक विकास।
(5) उत्तर हिन्दुस्तानी ताल पध्दति का सुसंगत, नियमबध्द तथा शास्त्रोक्त स्वरूप।
(6) तालों के दस प्राण, उनका अर्थ, परिभाषा और ताल से संबंध तथा व्यावहारिक उपयोगिता।
(7) अपने घराने अथवा परंपरा का इतिहास और उसकी विशेषता।
(8) तबले के विभिन्न घराने और उनकी वादनशैलीयों का विकास। घरानों घरानों के एकत्रीकरण की संभावना।
(9) तबला के विभिन्न बाजः किसी एक शैली का सम्पूर्ण परिचय।
(10) स्वतंत्र तबला वादन का रसग्रहन।
(11) भारतीय तालों का सौंदर्यशास्त्र तथा वैज्ञानिक रूप।
(12) अवनध्द वाद्यों का विकास। बनावट तथा गूंज के दृष्टिकोण से।
(13) प्राचीन भारतीय ताल सिध्दांत : उद्‌भव और विकास।
(14) नादब्रह्म और ताल।
(15) ताल तथा रियाज–मार्गदर्शन।
(16) ताल तथा ताल संबंधी अन्य कोई विषय।
(17) मंच प्रदर्शन।

प्रत्येक निबंध में परीक्षार्थी अपनी वादनशैली का भी संक्षिप्त विश्लेषण कर सकेगा और मंच प्रदर्शन में अपनी वादनशैली की सफलता के सम्बन्ध में भी विचार प्रकट करेगा। यह निबंध लगभग ५००० शब्दों का होगा।

'ब' मौखिक परीक्षा, 200

मौखिक परीक्षा में परीक्षक परीक्षार्थी के ताल और वादनशैली संबंधी ज्ञान की सूक्ष्म जाँच करेगा। प्रश्नों की कोई निश्चित सीमा नहीं है। किन्तु उनका ढंग समझने के लिए कुछ श्रेणियाँ नीचे दी जाती हैं।

Scanned by CamScanner

(1) संगीत अलंकार परीक्षा के पाठ्यक्रम तक सम्मिलित सभी ताल तथा
उनमें वादन करने की क्षमता।

(2) कुछ अप्रचलित तालों में वादन करने की क्षमता।

(3) सम तथा विषम तालों में भेद।

(4) तबले के विभिन्न बाज तथा उनकी विशेषतायें, उनका वादन व्दारा स्पष्टीकरण।

(5) विभिन्न घरानों की 'निकास'(बोल निकालने की पध्दति)

(6) सभी घरानों का तबला वादन प्रभावी व ढंगदार बनाने योग्य किसी एक निकास का अवलम्ब तथा प्रयोग।
तदनुसार हातगट्टा तैयार करने की विधि।

(7) स्वतंत्र वादन में प्रयुक्त विभिन्न वादन–प्रकार और उनका वादन व्दारा क्रियात्मक स्पष्टीकरण।

(8) नये तालों का निर्माण करने की क्षमता।

(9) बोलों का निर्माण, रचना और विभिन्न लयकारी दिखाने की (बजाने की) क्षमता।

(10) (सा) निम्नलिखित तालों की विस्तृत जानकारी तथा उनमें विलंबित, मध्य तथा द्रुत लय में विभिन्न वादन प्रकार बजाने की क्षमता।

1. तीनताल, 2. झपताल, 3. रूपक,
4. एकताल, 5. सवारी (15 मात्रा)।

उपरोक्त तालों में ताल का वजन कायम रखकर विभिन्न घरानों के पेशकार कायदे (विभिन्न जातियों के मुख, दोरा,बल, पल्टे,मींड इत्यादी सामग्री सहित) रेले, लड़ी, रौ. इत्यादि गतों के विभिन्न प्रकार, (गत, गत–कायदा, फरद, अकाल, अनाघात, मिश्र, मंझेदार, काकपद, दुपल्ली, चौपल्ली, त्रिपल्ली, जोड़ गतें इत्यादि) फरमाइशी बोलप्रकार, विभिन्न तिहाईयों के टुकड़े, परन तथा विशेषतापूर्ण बोलसमूह।

Scanned by CamScanner

प्राचीन तथा आधुनिक उस्तादों की दुर्लभ रचनाएँ इत्यादि सामग्री बजाने की क्षमता।

(रे) चौताल तथा धमार में उपज, रेले परन इत्यादि सामग्री वादन की क्षमता।

(ग) 9, 11, 13 मात्राओं के किसी भी ताल में वादन करने की क्षमता।

(म) दादरा तथा कहरवा में ढंगदार तथा रंगदार उस्तादी लग्गियां बजाने की क्षमता।

(प) विलंबित तथा द्रुतलय में गायन,वादन की ढंगदार संगति करने की क्षमता।

'क' मंचप्रदर्शन, अंक : 200

मंचप्रदर्शन की दो बैठकें होंगी। प्रत्येक बैठक एक घंटा होगी। एक बैठक में परीक्षार्थी 45 मिनिट तक किसी भी एक ताल में स्वतंत्र वादन, उसकी सम्पूर्ण वादनविधि तथा वादन प्रकारों के साथ प्रस्तुत करेगा। बचे हुए 15 मिनिट में दादरा तथा कहरवा में लग्गियाँ प्रस्तुत करेगा।

दूसरी बैठक में परीक्षार्थी 30 मिनिट तक किसी भी विषम मात्राओं के (9, 11, 13 इत्यादि)ताल में अप्रचलित ताल में स्वतंत्र वादन प्रस्तुत करेगा बचे हुए 30 मिनिट
में साथ संगति प्रस्तुत करेगा। (गायन या वाद्य के साथ)

Scanned by CamScanner